शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

गज़ल के उद्भव व विकास में उर्दू शायरों की भूमिका

अर्पित तिवारी (शोधार्थी)
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत में विदेशी शक्तियों के आगमन के साथ ही सांस्कृतिक समन्वय की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। उर्दू भाषा इसी समन्वय का परिणाम है, जो उत्तर भारत की भाषाओं के साथ दक्षिण की दक्किनी के मूल से बनी। इस शोधपत्र में आप अमीर फखरों द्वारा उर्दू के विकास के लिए योगदान को जानेंगे आप जानेंगे कि कैसे मीर हकी मीर से लेकर बादशाह बहादुरशाह जफर तक उर्दू भाषा गज़ल के माध्यम से भावों को अभिव्यक्त करने कामाध्यम बनी। दिल्ली की राजनीति में उतार चढ़ाव के बाद लखनऊ और पुनः दिल्ली उर्दू शायरी का केंद्र बनी। इस शोधपत्र में यह भी बताने का प्रयास किया गया है कि कैसे आजादी की लड़ाई के दौर में गज़ल का वर्ण्य विषय प्रेम, प्रेमी-प्रेमिका से इतर देश प्रेम, संघर्ष व आमजन का सुख-दुख हो गया। साथ ही प्रगतिवादी आंदोलन के दौर में जीवन का कठोर सत्य, व्यक्ति का संघर्ष आशा व निराशा के भाव गज़ल में अभिव्यक्त हुए। इस शोध पत्र में विभिन्न शायरों जैसे मीर, गालिब, मुहम्मद इकबाल, फैज अहमद फैज, निदा फाजली, डॉ. बशीर बद्र, कतील शिफाई, बहादुरशाह जफर, फिराक गोरखपुरी आदि का परिचय भी दिया गया है। इस शोधपत्र से आप उर्दू के विकास व इसमें विभिन्न शायरों के योगदान से परिचित हो सकेंगे।

मुख्य शब्द : *संस्कृतियों का समन्वय, अमीर खुसरो, मीर गालिब, बहादुर शाह जफर, यथार्थवाद, प्रगतिवाद, स्वातंत्र्योत्तर कालीन शायर।*

प्रस्तावना

भारत में विदेशी जातियों के आगमन और बसने के साथ विदेशी संस्कृतियों का भी आगमन हुआ। बाहरी संस्कृति के आगमन से भारतीय संस्कृति और विदेशी संस्कृति के तहरों का आदान-प्रदान और समन्वय प्रारंभ हुआ। इस समन्वय से एक नई संस्कृति का जन्म हुआ। जिसे गंगा-जमुनी संस्कृति कहा गया। संस्कृतियों के समन्वय में साहित्य, संगीत, स्थापत्यकला एवं भाषा के विविध तहरों का आदान-प्रदान हुआ और एक नई भाषा का जन्म हुआ जिसे उर्दू कहा गया। उर्दू भाषा में स्थानीय भाषा के शब्दों के साथ अरबी, फारसी और तुर्की के शब्दों का समावेश हुआ। "अमीर खुसरों की खालिकवारी, हिन्दी-उर्दू के सबसे पुराने कोश में सब जगह हिन्दी या हिन्दवी शब्द आया है।"**1** खुसरों ने ही पहले पहल इस भाषा का नाम हिन्दी रखा।

शमों हया दर हिन्दी लाज।
हासिल कहिये बाज खिराज।।**2**

खुसरों ने कहीं-कहीं इस भाषा का नाम हिन्दवी भी लिखा है, जैसे :

विश्तो तो नाम चरखा बेचारी पीरजन।
गोयन्द नाम रहटा दर हिन्दवी बचन।।**3**

इस प्रकार अमीर खुसरों ने फारसी और हिन्दुस्तानी बोलियों को समीप लाने का कार्य किया। अमीर खुसरों का यह कार्य उत्तर भारत तक सीमित रहा।

उर्दू भाषा का विकास

स्थानीय राजाओं के दक्षिण में शासन स्थापित होते ही दक्षिण में जिस भाषा का जन्म हुआ उसे दक्किनी कहा गया। औरंगजेब द्वारा बीजापुर आदि जीतने के बाद दक्किनी और उत्तर की भाषा उर्दू का मिलन स्थल औरंगाबाद बन गया। यहाँ उर्दू गज़ल के पितामह माने जाने वाले वली साहब ने उर्दू व दक्किनी का समन्वय किया। इस प्रकार उर्दू स्थानीय सीमाओं को तोड़कर सम्पूर्ण भारत में फैली। वली साहब को गज़ल का युग प्रवर्तक शायर कहा जा सकता है। वली साहब से प्रभावित जो अन्य शायर इस युग में हुए उनके नाम है हातिम, आवरू और फ़ाइज देहलवी। अन्य समकालीन शायर थे ख्वाजा मीर दर्द, मिर्जा मुहम्मद रफी सौदा और मीर तकी मीर।

उर्दू के प्रमुख शायर मीर तकी मीर

उर्दू के प्रमुख गज़लकारों में एक मीर तकी मीर का पूरा नाम खुदा ए सुखन मुहम्मद तकी उर्फ मीर तकी मीर था वे उर्दू और फारसी के महान शायर थे। आगरा के अकबरपुर में जन्मे मीर तकी मीर, पिता के निधन के पश्चात् दिल्ली आ गये। अहमदशाह अब्दाली के दिल्ली पर हमले के बाद वह अशफ उददुलाह के दरबार में लखनऊ चले गए।**4** 25-26 वर्ष की आयु में मीर एक दीवाने शायर के रूप में विख्यात हो चुके थे। "मीर तकी मीर की गज़लों के 6 बड़े-बड़े दीवान मिले हैं जिनमें 1839 गज़लें और 83 स्फुट शेर मिलते है। इनकी फारसी गज़लों का भी एक दीवान है जो अब तक अप्रकाशित है। इनकी गज़लें अद्भुत ताजगी चमत्कार और करूणा से परिपूर्ण है।"**5**

मीर तकी मीर का एक प्रसिद्ध शेर है :

पत्ता पत्ताए बूटा बूटाए हाल हमारा जाने है।
जाने न जानेए गुल ही न जाने
बाग तो सारा जाने है।

इस प्रकार मीर तकी मीर ने प्रेम (इश्क) प्रेम में असफलता (नाकामी) और विरह (मेहदमी) जैसे विषयों पर गज़लें लिखी। इनकी शैली से प्रभावित होकर गज़लें लिखने वाले शायर हुए गालिब जौक, फिराक व नासिर काजमी।

दिल्ली की राजनीति में उथल-पुथल और मुगल साम्राज्य के बिखराव के दौर में गज़ल का प्रमुख केंद्र लखनऊ हो गया। यह वह दौर था जब मुशायरों का दौर प्रारंभ हुआ। 1856 में लखनऊ के नबाव वाज़िद अली शाह को सत्ता से च्युत कर लखनऊ को ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन कर लिया गया। वाज़िद अली शाह कला को प्रश्रय देने वाले शासक थे एवं स्वयं भी गज़लें लिखते थे। लखनऊ के अंग्रेजी शासन में विलय के बाद दिल्ली एक बार फिर गज़ल का केंद्र बनी। इस युग के प्रमुख शायर हुए शाहनसीर, जौक ए गालिब तथा मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर। यह समय उर्दू शायरी का स्वर्ण युग था।

गालिब

गालिब अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के दरबारी कवि भी थे। गालिब ने अधिकांश गज़लें फारसी में लिखी, उन्होंने उर्दू में कम ही लिखा लेकिन जो भी लिखा लोग आज भी उसके कायल हैं। वर्ण्य विषय की दृष्टि से देखें तो गालिब की गज़लों का आयाम अति विस्तृत है। गालिब की गज़ल के कुछ अंश इस प्रकार हैं :

दिले नादा तुझे हुआ है
आखिर इस दर्द की दवा है।
हम है मुश्ताक और वो बेजार
या इलाही ये माजरा क्या है।।**6**

मीर तकी मीर के बाद गालिब उर्दू का एक ऐसा प्रकाश स्तम्भ है जिसकी गज़ल ने उर्दू गज़ल को एक नये आयाम से परिचित कराया। गालिब की गज़ल न सिर्फ अश्क और आशिकी तक सीमित

रही बल्कि उसने जीवन की छोटी-छोटी अनुभूतियों के अतिरिक्त जीवन की बड़ी से बड़ी घटनाओं का उल्लेख बडे. क्षीर्शनिक अंदाज में किया है।"**7**

बादशाह बहादुरशाह जफर

1857 ई. का स्वतंत्रता संग्राम भारत की आजादी के लिए लड़ा जाने वाला पहला संग्राम था। इस संग्राम के बाद ही मुगल साम्राज्य का अंत हो गया। मुगल वंश के अंतिम शासक बादशाह बहादुरशाह जफर ने अपने जीवन के आखिरी दिन रंगून में निर्वासन में व्यतीत किए।

रंगून में उन्होंने जो गज़लें लिखी वे देश की मिट्टी से बिछोह, दुख-दर्द व निराशा के भाव से भरी हुई है :

है कितना बदनसीब जफर दफन के लिए।
दो गज जमीं भी न मिली कू-ए-यार में।।

बहादुरशाह जफर के प्रमुख शेरों में से एक उदाहरण प्रस्तुत है :

पसेमर्ग मेरी मजार पर, जो दिया किसी ने जला दिया।
उसे आह दामने बाद में सरेशाम ही बुझा दिया।
मैंने दिल दिया, मैंने जां भी दी, मगर आह तूने न कद्र की।
किसी बात को जो कभी कहा, उसे चुटकियों में उडा दिया।**8**

20वीं सदी का प्रारंभ वह दौर था जब देश को आजाद कराने का आन्दोलन प्रारंभ हो चुका था। इस आंदोलन में जहाँ एक ओर संवैधानिक तरीके से देश को आजाद कराने की हिम्मत रखने वाले नेता थे तो दूसरी ओर क्रांतिकारी युवा थे जिन्होंने क्रांति का मार्ग अपनाया था। इस दौर में देशप्रेम, जोश और उत्साह जैसे विषयों को लेकर गज़लें लिखी गई।

मुहम्मद इकबाल

इस युग के एक महान शायर मुहम्मद इकबाल हुए जिन्होंने उर्दू गज़ल को दर्शन की नई राहों से परिचित कराया। इकबाल की गज़ल नये युग की गज़ल थी।

मुहम्मद इकबाल द्वारा लिखे गए चंद शेर प्रस्तुत हैं :

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुले बुले हैं इसके ये गुलसितां हमारा।
मजहब नहीं सिखाताए आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम, वतन हैं, हिन्दोस्तां हमारा।।

फिराक गोरखपुरी

इसी दौर के एक प्रमुख शायर फिराक गोरखपुरी उल्लेखनीय हैं। फिराक गोरखपुरी का पूरा नाम रघुपति सहाय था, फिराक उनका तखल्लुस था। इनके पिता मुंशी गोरखप्रसाद जी पेशे से वकील थे। फिराक गोरखपुरी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और स्नातक की परीक्षा में पूरे प्रदेश में चौथा स्थान प्राप्त किया। फिराक गोरखपुरी आईसीएस की परीक्षा में भी चुने गये थे लेकिन नौकरी छोड़कर स्वराज आन्दोलन में कूद पड़े। वे अखिल भारतीय कांग्रेस के दफ्तर में अपर सचिव भी रहे। फिराक गोरखपुरी 1930 से 1959 ई. तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के अध्यापक रहे।

उनकी रचनाएँ हैं : गुल-ए-नगमा, मवअल रूह-ए-कायनात, नग्म-ए-साज, गजालिस्तान आदि। गुल-ए-नगमा के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार, सोवियत लैंड अवार्ड से सम्मानित किया गया। फिराक गोरखपुरी 1970 में साहित्य अकादमी के सदस्य चुने गए। उन्हें साहित्य व शिक्षा के क्षेत्र में 1968 में भारत सरकार के पद्म भूषण से नवाजा गया।

फिराक गोरखपुरी का एक शेर देखिए -

कोई आया न आएगा लेकिन।

क्या करें गर न इंजतार करें।।**9**

फिराक ने अपनी शायरी का विषय न तो इश्क को बनाया और न गम को। उन्होंने न तो जिंदगी के प्रति अपनी नाराजगी दिखाई और न जिंदगी की परेशानियों से घबरा कर वैराग्यवादी भावनाओं को प्रश्रय दिया, बल्कि फिराक गोरखपुरी ने सलीके के साथ जिंदगी से जो मिला उसे अपनाने की सिफारिश की।

भारत में 1936 ई. में प्रगतिशील आंदोलन का प्रारंभ हुआ। इस समय साहित्य को वर्ग विशेष के दायरे से निकालकर आम जनता तक पहुंचाने के प्रयास हुए। यह वह दौर था जब यथार्थवादी व प्रगतिशील दृष्टिकोण वाला साहित्य लिखा गया। इस समय नज्में ज्यादा लिखी गई और ग़ज़ल कहने वालों में कमी आई परन्तु इस समय मुईन एहसन जुज्बी, मजरूह सुल्तानपुरी और फैज अहमद फैज जैसे शायर ग़ज़ल कहते रहे।

मजरूह सुल्तानपुरी

मजरूह सुल्तानपुरी प्रगतिशील लेखक आन्दोलन में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। मजरूह सुल्तानपुरी का जन्म उत्तरप्रदेश के सुल्तानपुर में हुआ था उनका पूरा नाम असरार अल हसन खान था। यूनानी मेडिसिन की पढ़ाई पूरी करने के बाद मजरूह साहब ने हकीम के रूप में प्रैक्टिस छोड़ दी एवं उर्दू मुशायरों में नियमित प्रस्तुति देने लगे। मजरूह सुल्तानपुरी एक लोकप्रिय फिल्म गीतकार भी रहे है। जानिसार अख्तर ने भी जीवन के अंतिम दौर में ग़ज़ल को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया।

मजरूह सुल्तानपुरी द्वारा लिखित उर्दू का प्रसिद्ध शेर प्रस्तुत है :

मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर।
लोग साथ आते गए और कारवां बनाता गया।।

फैज अहमद फैज

इसी दौर के एक प्रमुख शायर फैज अहमद फैज हुए है जो पहले प्रगतिशील दृष्टिकोण पर गज़लें लिखते थे। सन 1941 में उनका पहला काव्य संग्रह 'नक्शे फरियादी' प्रकाशित हुआ जो प्रगतिशील भावना की अभिव्यक्ति था। इस काव्य संग्रह के बाद फैज अहमद फैज ने प्रगतिशील रचनाकारों के बीच अपना स्थान बनाया। लेकिन बाद में 1953 में जब फैज साहब का दूसरा काव्य संग्रह 'दस्ते सबा' प्रकाशित हुआ तब फैज एक ग़ज़लकार के रूप में स्थापित हो गये। उन्होंने परम्परागत ग़ज़ल को नए दौर में नए रूप में प्रस्तुत किया।

फैज अहमद फैज ने अंग्रेजी और अरबी में एम.ए. की उपाधियां प्राप्त की तथा एम.ए.ओ. कॉलेज अमृतसर में (1934 से 1940 तक) तथा हेली कॉलेज लाहौर में (1940 से 1942 तक) प्राध्यापक रहे। इसके बाद फौज में कर्नल रहे। उन्होंने पत्रकारिता का कार्य भी किया। इसके बाद उन्हें कांसपिरेंसी केस में जेल भी जाना पड़ा।"**10** जेल के दौरान लिखी गई कविता जिन्दान नाया को बहुत पसंद किया गया।

फैज ने अपनी ग़ज़लों में प्रेम और मुह्ब्बत के अलावा सांसारिक यथार्थवाद को अपनी अभिव्यक्ति का विषय बनाया।

लौट जाती है उधर को भी नजर क्या कीजे।
अब भी दिलकश है तेरा हुस्न मगर क्या कीजे।
और भी दुख है जमाने में मुहब्बत के सिवा
राहते और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा।।**11**

भारत की स्वतंत्रता से पहले संयुक्त पंजाब में भी कई शायर ग़ज़लों के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति करते रहे।

इनमें प्रमुख है - हफीज जालंधरी, सूफी गुलाम तब्वसुम, हफीज होशियारपुरी, एहसान दानिश,

सैफुद्दीन सैफ, कतील शिफ़ाई, अब्दुल हजीद, आशिद आबिद।

कतील शिफ़ाई

कतील शिफ़ाई का जन्म सन 1919 में हरीपुर हजारा में हुआ था। सन 1946 में नजीर अहमद ने उन्हें मशहूर पत्रिका आदाबए-लतीफ में उप सम्पादक बनाकर बुलाया। उनकी पहजी गज़ल लाहौर से निकलने वाले साप्ताहिक अखबार 'स्टार' में छपी। जिसके सम्पादक कमर जलालाबादी थे। 1947 ई. में कतील ने लाहौर में 'तेरी याद' फिल्म में गीतकार के रूप में सफर शुरू किया।

किया है प्यार जिसे हमने जिंदगी की तरह,
वे आसना भी मिला हमसे अजनबी की तरह।
कभी न सोचा था हमने कतील उसके लिए
करेगा हमपे सितम वो भी हर किसी की तरह।**12**

1947 में देश स्वतंत्र हुआ साथ ही देश का विभाजन भी हुआ। क्वो फसाद के इस माहौल में कई शायर, कलाकार भी अपने घरों को छोड़कर बेघर हो गये। स्वतंत्रता के बाद जो गज़ल कहने वाले हुए उनकी गज़लों में मातभूमि से बिछुड़ने का दुख सबसे ज्यादा अभिव्यक्ति हुआ। पाकिस्तान में सन 1950 के बाद जो शायर हुए उनके नाम है शकैब जलाली, शहजाद अहमद, जफ़र इकबाल अहमद फ़राज, मुजफ्फर वारसी, अहमद मुश्ताक, जावेद शाहीन।

उर्दू गज़ल का क्षेत्र पुरूष वर्चस्व वाला रहा है परंतु स्त्री की वेदना, दुख और उसके संघर्ष को स्त्री गज़लकारों ने अभिव्यक्ति दी। उर्दू की इन कवयित्रियों के नाम हैं अदा ज़ाफरी, किश्वर नाहिद, परबीन फना, परबीन वाकिर। 1970 के बाद उभरने वाले पाकिस्तानी शायरों में अतर नफ़ीस, सलीम कौसर, इफ्तेखार आरिफ़, उबेदुल्ला अलीमए जमाल, ऐहसानी मोहसिन एहसान। पाकिस्तान में गीत की भाषा में गज़ल कहने वाले शायर इतने इंशा हुए।

भारत की आजादी के बाद भी गज़ल का यह दौर जारी रहा। स्वातंत्रयोत्तर कालीन शायरों में डॉ. बशीर बद्र और निदाफ़ाजली का उल्लेख समीचीन होगा।

डॉ.बशीर बद्र

डॉ.बशीर बद्र साठोत्तर उर्दू गज़लकारों में प्रमुख हैं। बशीर बद्र का जन्म 1936 ई. में कानपुर में हुआ था। जिन्दगी की आम बातों को बेहद खूबसूरती और सलीके से अपनी गज़लों में कहा जाना डॉ.बशीर बद्र की खासियत है। डॉ.बशीर बद्र ने उर्दू अकादमी के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। उन्हें 1999 में भारत सरकार ने पदमश्री से सम्मानित किया। उन्हें 1999 में कविता संग्रह 'आस' के लिए उर्दू में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। नई उपमाओं, प्रतीकों एवं बिम्बों के प्रयोग की दृष्टि से इनकी गज़लें कला पक्ष के चरम बिन्दु को स्पर्श करती है।

वो गज़ल वालों का उस्लूब समझते होंगे
चाँद कहते हैं किसे खूब समझते होंगे।
इतनी मिलती है मेरी गज़लों से सूरत तेरी
लोग तुझको मेरा महबूब समझते होंगे।'**13**

निदा फ़ाजली

निदा फ़ाजली स्वातंत्रयोत्तरकालीन उर्दू शायरों में एक प्रमुख स्थान रखते हैं। निदा फ़ाजली का जन्म कश्मीर के एक गांव फ़ाज़िल में हुआ था। यहाँ से उनका परिवार विस्थापित होकर दिल्ली चला आया। निदा फ़ाज़ली की शिक्षा-दीक्षा ग्वालियर में हुई। इन्हें बचपन से ही लिखने का शौक था। 1964 में निदाजी काम की तलाश में मुम्बई आये और धर्मयुग व ब्लिट्ज पत्रिकाओं व समाचार पत्रों में लिखने लगे। उर्दू कविता का उनका पहला संग्रह 1969 में छपा।

बॉलीबुड की रजिया सुल्तान से निदा फ़ाज़ली ने गीतकार के रूप में अपना कैरियर प्रारंभ किया। इसके बाद होश वालों को खबर क्या (सरफरोश), कभी किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता (आहिस्ता-आहिस्ता) जैसी गज़लें लिखी। उनकी कई गज़लों को प्रसिद्ध गज़ल गायक जगजीत सिंह ने अपनी आवाज दी है जैसे सफर में धूप तो होगी। जो चल सको तो चलो और दुनिया जिसे कहते है जादू का खिलौना है। 1998 में निदा फाजली को उनके काव्य संग्रह 'खोया हुआ सा कुछ' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। 2003 में फिल्म सूर के लिए सर्वश्रेष्ठ गीतकार का पुरस्कार मिला। वे 2013 में पदमश्री से सम्मानित किए गये।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: कहा जा सकता है उर्दू गज़ल ने अपना सफर 13वीं सदी में अमीर खुसरों से प्रारंभ किया और 20वीं सदी तक फलती-फूलती गज़ल आज वर्तमान स्वरूप तक पहुँची है। गज़ल चाहे अपने उदय के समय 13वीं सदी में हो या आज उसमें हमेशा एक नयापन एक ताजगी रही है और वह सुनने वालों के दिलों को छूती रही है। समाज के हर वर्ग ने गज़ल को पसंद किया है और सदियों तक गज़ल इसी प्रकार लोकप्रिय होती रहेगी।

संदर्भ ग्रन्थ

1 गोयल अयोध्या प्रसाद, शेर ओ शायरी संस्करण 1950 पृष्ठ 52, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली

2 त्रिपाठी रामनरेश, कविता कौमुदी, भाग 4 संस्करण 1955, पृष्ठ 6, नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, मुम्बई

3 त्रिपाठी रामनरेश, कविता कौमुदी, भाग 4 संस्करण 1955, पृष्ठ 6, नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, मुम्बई

4 www.kavitakosh.org

5 अस्थाना रोहिताश्व, हिन्दी गज़ल : उद्भव और विकास, संस्करण 2010, पृष्ठ 102, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

6 अस्थाना रोहिताश्व, हिन्दी गज़ल : उद्भव और विकास, संस्करण 2010, पृष्ठ 102, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

7 भण्डारी डॉ. प्रेम, हिन्दोस्तानी संगीत में गज़ल गायकी, संस्करण 1955, पृष्ठ 15, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

8 अस्थाना रोहिताश्व, हिन्दी गज़ल : उद्भव और विकास, संस्करण 2010, पृष्ठ 104, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

9 www.wikipedia.com.

10 www.wikipedia.com.

11 www.hindi.firstpost.com

12 www.kavitakosh.org.

13 अस्थाना रोहिताश्व, हिन्दी गज़ल : उद्भव और विकास, संस्करण 2010, पृष्ठ 124, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली